

मेरी गणित की कक्षाएँ और सौरभ*

मोहम्मद उमर



कक्षा में प्रत्येक बच्चा सीखना चाहता है और सीख भी सकता है। बस जरूरत है—शिक्षक के प्यार और प्रोत्साहन की। साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि कक्षा में प्रत्येक बच्चे को कुछ करने, कुछ करके दिखाने के अवसर मिलें। यहाँ पर एक शिक्षक के कुछ ऐसे ही अनुभव दिए जा रहे हैं, जो बताते हैं कि सबकी नज़रों में कुछ नहीं कर सकने वाला बच्चा भी अवसर प्राप्त होने पर किस प्रकार अपनी क्षमता दिखा सकता है।

एकलव्य के होशंगाबाद कार्यालय में बच्चों के लिए एक पुस्तकालय है। यहाँ आस-पास के काफ़ी बच्चे किताबें पढ़ने आते हैं। कुछ बच्चे पढ़ते तो कम दिखते हैं, ज़्यादातर मखमली घास के मैदान में उछल-कूद और गद्म पटखनी करते ही नज़र आते हैं।

इन खिलंदड़ लड़कों की जमात में एक असामान्य-सा दिखने वाला लड़का सौरभ भी जब-तब आता रहता है। सौरभ के मुँह से हरदम लार टपकती रहती है। ठीक से बोल नहीं पाता। उसका अपने अंगों पर भी अच्छी तरह नियंत्रण नहीं है। शायद इसीलिए उसके साथी उसे पागल कह कर अपने से दूर धकेल देते हैं। कई बार मैंने खुद उसके झगड़े सुलझाए हैं। आँसू भरी आँखों को मसलते हुए

वह मुश्किल से इतना भर कह पाता था, “स...र जी इ...स...ने... मा...र दि...या।”

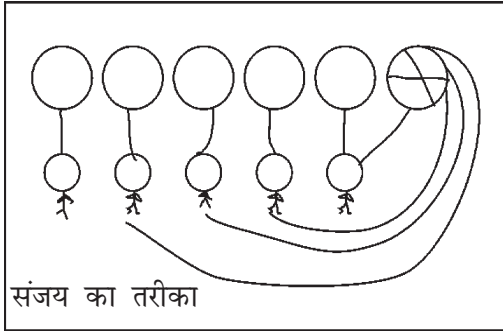
कुछ समय पहले मुझे गणित शिक्षण के अंतर्गत भिन्न (fraction) पढ़ाने की कुछ विधियों को जाँचने के लिए कई दिनों तक एक विद्यालय में जाना पड़ा। मैं उस विद्यालय में छठवीं कक्षा में बच्चों के साथ बैठता था इसी कक्षा में मुझे पिछली कतार में एक कोने में सौरभ बैठा हुआ दिखायी दिया। सौरभ के बारे में अब तक मेरी यही धारणा थी कि वह कमज़ोर बुद्धि का है। मैं जब भी कक्षा में पढ़ा रहा होता तो पीछे की ओर बैठा सौरभ अपनी असमान्य शक्ति लिए दाँत बाहर निकाले, मुस्कराता रहता है और होंठों से लार की टपकन भी जारी रहती।

* 'शैक्षणिक संदर्भ पत्रिका', वर्ष- 1, अंक-5, नवंबर 2008-फरवरी 2009 से साभार।

एक दिन कक्षा में सभी बच्चों को हल करने के लिए मैंने एक सवाल दिया था। सवाल था - छह रोटियों को पाँच लोगों में बराबर-बराबर बाँटो। यह सवाल हल करने के लिए बच्चों को अपनी कॉपी में छह रोटियों और पाँच बच्चों के चित्र बनाकर उन्हें हिस्से भी बाँटकर दिखाने थे।

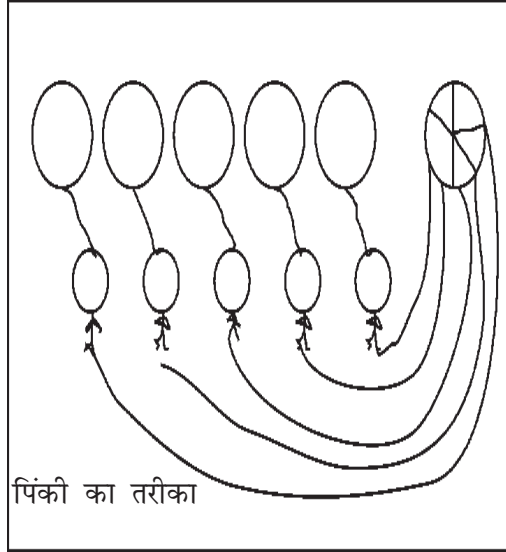
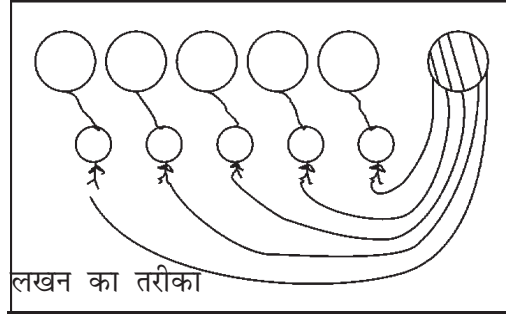
बच्चे इस काम में मसरूफ़ हो गए थे, कुछ एक रूप के सिक्के से या फिर चूड़ी की मदद से रोटी बना रहे थे और कुछ हिस्सा बाँटने में व्यस्त थे। कुछेक बच्चे जो इसे हल कर चुके थे, उन्होंने अपनी कॉपियाँ ऊपर उठाकर दिखाईं। उनमें से कुछ के तरीके इस प्रकार थे।

जाहिर हैं, इन सभी तरीकों में पाँच बच्चों को बराबर-बराबर हिस्से नहीं मिल पा रहे हैं, इसका अहसास कक्षा के अन्य बच्चों को भी शायद हो गया था।



मैंने पूछा, “क्या सबको बराबर-बराबर मिल रहा है?”

“नहीं सर जी, किसी का छोटा है, किसी का बड़ा है”। “बराबर नहीं है सर जी” इस तरह की कई आवाज़ें सुनाई पड़ीं।



मैं अपने साथ कागज़ की वृत्ताकार चकतियाँ ले गया था, जिन्हें कागज़ की कई तहों पर गिलास रखकर पेंसिल से गोला बनाने के बाद मैंने कैंची से काट लिया था।

ऐसी ही कुछ चकतियाँ बाहर रखते हुए मैंने कहा, “इस सवाल को बोर्ड पर या चकतियों की मदद से भी कर सकते हैं। बताओ, कौन करना चाहता है?”

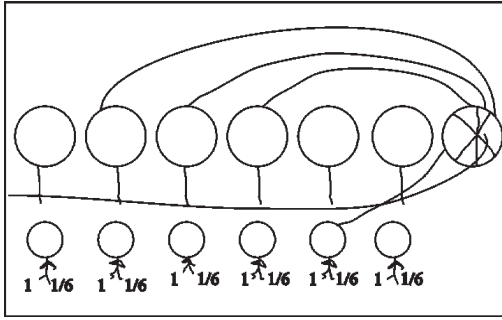
“सर जी हम”, कहते हुए केवल दो-तीन बच्चों ने ही हाथ खड़े किए। उनमें से एक हाथ सौरभ का भी था। सौरभ को ज़्यादा संजीदगी से

न लेते हुए मैंने एक अन्य लड़के को बुलाया। उसने बोर्ड पर जो हल किया वह तकरीबन पिकी के जैसा ही था।

मुझसे पहले ही बच्चों ने शोर मचाकर “बराबर नहीं है सर जी”, कहकर इस हल को भी खारिज कर दिया।

अब सिवाय सौरभ के और किसी का हाथ नहीं खड़ा था।

वह कह रहा था- “स...र जी ह... म.... क...रें...गे।”



सौरभ द्वारा सुझाया गया जवाब

मैंने आगे बढ़कर उसे चॉक थमाई ही थी कि पीछे कुर्सी पर बैठी मैडम जी के मुँह से बरबस निकल पड़ा, “अरे सर, यह तो नहीं कर पाएगा।”

फिर भी मैंने कहा, “देखते हैं, क्या करता है।”

सौरभ के हाथों की चॉक बड़ी मुश्किल से बोर्ड पर चल पा रही थी। पाँच लड़के जैसे-तैसे बनाने के बाद अब वह रोटियों को सही आकार देने के लिए जूझ रहा था। हर बच्चे को एक-एक रोटी देने के बाद उसने छठवीं रोटी को पाँच बराबर टुकड़ों में बाँटने का प्रयास किया। इस कोशिश में उसने रोटी को तीन-चार

बार हाथों से रगड़कर मिटाया और फिर से बनाया। कक्षा के सभी बच्चे, मैं और मैडम सभी उत्सुकता से देख रहे थे कि सौरभ कर क्या रहा है।

अचानक सौरभ ने छठवीं रोटी मिटा दी और मेरी बगल की कुर्सी पर रखी कागज़ की वृत्ताकार चकती को उठाने के बाद मेरी ओर घूमकर बोला, “स...र जी कै...ची...।”

मैंने अपने थैले से कैची निकालकर उसे दे दी। काफ़ी सावधानी बरतते हुए उसने इस चकती को पाँच टुकड़ों में बाँट लिया। ये कागज़ के टुकड़े बिलकुल बराबर तो नहीं थे लेकिन उन्हें बराबर माना जा सकता था।

एक टुकड़ा ऊपर उठाकर दिखाते हुए वह बोला, “स...र जी इ..त..ना.. और..र मि.. ले.. गा।”

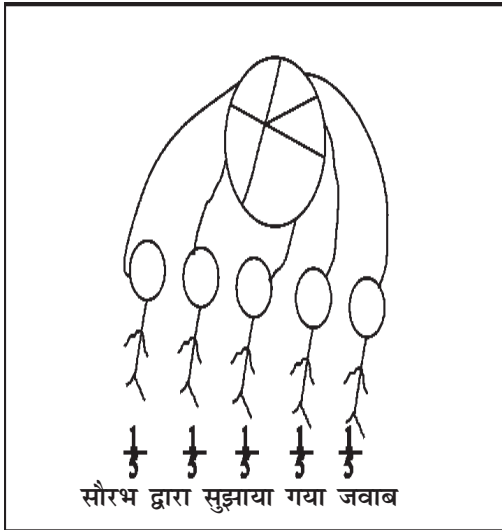
ये मेरे लिए बड़े ताज़्जुब की बात थी। सौरभ को उसके सहपाठी और मैडम कमज़ोर समझते हैं, मैं भी अब तक उसे मंदबुद्धि मानता आ रहा था, पर वह तो अच्छी समझ रखता है। रोटी को बराबर बाँटने का प्रयास और उसके लिए वैकल्पिक विधि सोच पाने की क्षमता रखने वाला बच्चा कम बुद्धि का नहीं हो सकता।

कक्षा खत्म करने के बाद मैंने मैडम के पास जाकर कहा कि सौरभ भी दूसरे बच्चों की तरह ही कक्षा में रहने और सीखने का अधिकारी है।

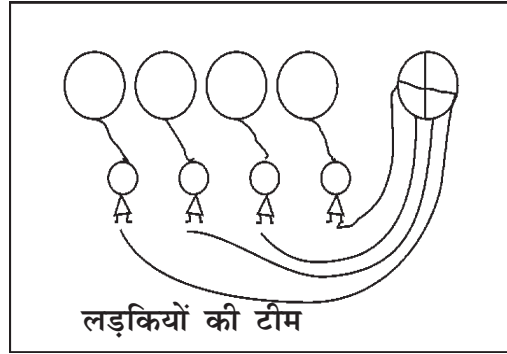
अगले दिन से मैंने सौरभ को पंक्ति में सबसे आगे की ओर बिठा दिया, जहाँ से उसे ब्लैकबोर्ड अच्छे से दिख सके। इसके बाद मैंने

पाया कि वह नियमितता के साथ स्कूल आने लगा, साथ ही उसकी जगह पर यदि कोई और लड़का बैठ जाए तो वह उसे हटने के लिए कहता है। यदि दूसरा लड़का जगह न छोड़े तो सौरभ गुस्से में सबसे पीछे जाकर बैठ जाता है। तब मुझे उसे मनाकर आगे लाना पड़ता है।

यह बात सही है कि मैं अपनी ओर से उस पर कुछ ज़्यादा ध्यान दे रहा था। लेकिन वह खुद भी पढ़ाई में रुचि ले रहा था, यह बात मुझे हाल ही में बच्चों को दिए गए प्रश्न पत्र की जाँच के दौरान मालूम हुई। मैंने पूरी कक्षा के लिए प्रश्नपत्र बनाकर परीक्षा ली। प्रश्न पत्र में एक सवाल था



लड़कों की टीम 'ए' और लड़कियों की टीम 'बी' है। वे अपनी टोली के साथ घूमने गए और अपने साथ खाने के लिए मीठे पराठे भी ले गए। वे आपस में बराबर बाँट कर ही खाते हैं। बताओ, किस टोली के लोगों को ज़्यादा बड़ा हिस्सा मिलेगा?



टीम 'ए' लड़के 7/6 टीम 'बी' लड़कियाँ 5/6

इस सवाल पर जब बातचीत शुरू हुई तो "लड़कों को ज़्यादा मिलेगा सर जी", कक्षा के कई बच्चे एक साथ बोले।

"तुम लोगों को क्या लगता है, किस टीम के लोगों को ज़्यादा मिलेगा?"

मैंने लड़कियों से पूछा।

"लड़कों को ज़्यादा मिलेगा," कुछ लड़कियाँ बोली।

आगे बैठा सौरभ धीरे-से बोला, "न..हीं स..र जी, ल...ड़...कि...यों को जा...दा मि....ले..गा।"

मैंने कहा, "देखो, ये सौरभ क्या कह रहा है। सौरभ का कहना है कि लड़कियों को ज़्यादा हिस्सा मिलेगा।"

कुछ लड़के बोले, "कुछ भी कहता है सर जी, लड़कों को ही ज़्यादा मिलेगा।" मैं फिर बोला, "देखो, पूरी कक्षा एक तरफ़ है और सौरभ दूसरी तरफ़। पता नहीं कौन सही है और कौन गलत। सौरभ तुम बोर्ड पर आकर बता सकते हो कि कैसे लड़कियों को ज़्यादा मिल रहा है?"

सौरभ उठकर आया और कुछ देर लगाकर उसने बोर्ड पर दोनों टीमों के लिए चित्र बनाया।

सौरभ ने न सिर्फ़ पराठों को सही-सही बाँटा बल्कि हर एक के हिस्से लिए भिन्न नीचे लिख दिए। अब स्पष्ट था कि लड़कियों को

लड़कों की तुलना में ज्यादा बड़ा टुकड़ा मिल रहा है। पूरी कक्षा के बच्चों का उत्तर गलत था, सौरभ अकेला सही था। मुझे बहुत अच्छा लगा। हम सबने मिलकर सौरभ के लिए जोर से तालियाँ बजायी।

